E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 2 | February 2025

कोराँव तहसील (जनपद प्रयागराज) में भूमि उपयोग प्रतिरूप एवं जनसंख्या वृद्धि : एक भौगोलिक अध्ययन

दिलीप कुमार [1], डॉ अमित सचान [2]
[1]शोधछात्र, भूगोल,पी0एस0एम0पी0जी0 कॉलेज कन्नौज
[2]प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, पी0एस0एम0पी0जी0 कॉलेज, कन्नौज
(सम्बद्ध छत्रपतिशाहुजी महाराज वि0वि0, कानपुर उ0प्र0)

शोध सारांश –

भूमि उपयोग क्रमवार रूप में भूमि प्रयोग दोहन की प्रक्रिया है। वास्तविकता में भूमि प्रयोग एवं भूमि उपयोग में बहुत ही शूक्ष्म अन्तर है क्योंकि दोनों ही शब्द अलग–अलग परिस्थितियों के सूचक हैं। 'भूमि प्रयोग' शब्द संरक्षण एवं समय के सन्दर्भ में हैं जबकि 'भूमि उपयोग' शब्द व्यवहारिकता का सूचक है जो प्राप्त अवधि के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। जब तक किसी क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रकृतिदत्त विशेषताओं के अनुरूप रहता है अर्थात् मानवीय क्रियायें भौतिक कारकों द्वारा निर्धारित होती है तब तक भूमि का आर्थिक महत्व अपेक्षाकृत बहुत ही कम एवं जीवन स्तर निम्नतम् होता है।

जनसंख्या वृद्धि का अर्थ अधिकतर एक क्षेत्र विशेष में किसी समय रह रहे लोगों की संख्या में परिवर्तन से है। भूमि उपयोग ओर जनसंख्या वृद्धि एक दूसरे के पूरक हैं, अर्थात् तजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए कृषि का विकास आवश्यक है। माल्थस के अनुसार किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि भी गुणोत्तर क्षेणी के अनुसार बढ़ती है, जबकि जीविकोपार्जन के साधन समांतर श्रेणी के अनुसार बढ़ते हैं। माल्थस के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि 1,2,4,6,8,16,32,64,128,256..... की दर से बढ़ती है। जबकि जीविकोपार्जन के साधन 1,2,3,4,5,6,7,8,9 ..... की दर से बढ़ती है। माल्थस के अनुसार प्रत्येक 25 वर्षों बाद जनसंख्या दुगनी हो जाती है। जनसंख्या बढ़ने से भोजन, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि समस्याएँ बड़ी जटिल होती है। एक तरफ जहाँ विश्व की जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ रही है वहीं दूसरी तरफ उसी अनुपात में खाद्यान्न की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। जिसके चलते मानव के सामने एक विभिन्न प्रकार की खाद्यान्न सम्बंधी संकट उत्पन्न हो रहे हैं। आज विश्व के अधिकांश देश खाद्यान्न संकट से गुजर रहे है, एवं लोग भूखमरी से मर रहे हैं। इसलिए मानव को जागरूक करना होगा तथा जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करते हुए कृषि उत्पादन पर जोर दे देना होगा तभी जनसंख्या वृद्धि एवं भूमि खाद्य संकट की समस्या से मुक्त हो सकेगा।

शब्द संक्षेप – भूमि उपयोग प्रतिरूप, जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, विश्व खाद्य संकट, साक्षरता लिंगानुपात।

प्रस्तावना – भारत एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कृषि का योगदान लगभग 18–20 प्रतिशत है। हालांकि औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों के विकास के कारण GDP में इसका हिस्सा घट रहा है, फिर भी यह आर्थिक स्थिरता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत में चावल और गेहूँ का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और दालों का अग्रणी उत्पादक है। 1960 के दशक में हरति क्रान्ति जैसी फसलों में खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ावा दिया, जिससे भारत खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर बन सकें। भारत से कुल निर्यात में कृषि का योगदान लगभग 12–15 प्रतिशत है। भारत में 65 प्रतिशत से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। ग्रामीण लोगों का मुख्य व्यवसाय प्राथमिक कार्यों से ही सम्बंधित होता है। (**स्रोत : सुधीर कुमार एन, कुरूक्षेत्र, जनवरी 2023**)

भूगोल के अन्तर्गत भूमि को एक क्षेत्र के रूप में मानते हैं, जो अमिट तथा स्थायी है। इस क्षेत्र को सामान्यतया धरातल, मिट्टी तथा पृथवी के रूप में प्रयुक्त किया जाता हैं जब मानव भूमि को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए परिवर्तित एवं परिमार्जित करता है तो वह आर्थिक संसाधन एक इकाई के रूप मे परिणत हो जाती है और भूमि से जब उत्पादक कारक के रूप में भोज्य पदार्थ उद्योगों के लिए

कच्चा माल व शक्ति प्रदायी संसाधन प्राप्त होते है जिसका उपयोग जन–जीवन एवं आर्थिक विकास हेतु किया जाता हैं तो उस भूमि का उपयोग निवास्य स्थल, पार्क, मनोरंजन स्थल आदि के रूप में किया जाता है। भूमि संसाधनों का उपयोग विविध प्रकार से मानव की विभिन्न आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए किया जाता है। मनष्य की आवास, भोजन, आवागमन हेतु, संचार, संसाधनों, ईंधन, फूल, सब्जी इत्यादि अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति भूमिगत संसाधनों पर ही निर्भर है। सर्वाधिक जनसंख्या मुख्यतः इस संसाधन के दोहन पर आश्रित है।

जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होने के कारण जोत का आकार छोटा होता जा रहा है और प्रति व्यक्ति कृषि भूमि में कमी आ रही है। ऐसी परिस्थितियों में खाद्य समस्या को हल करने के लिए कृषि उपज में वृद्धि के साथ–साथ खाद्यानों का आयात करना ही विकल्प रह गये थे। 1965 में कृषि उत्पादों की कीमतो के सम्बन्ध में नीति अपनाई गई। इस नीति के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि होने लगी परन्तु जनसंख्या की वृद्धि दर, कृषि की वृद्धि दर से ज्यादा थी। जनसंख्या के तीव्र गति से बढने के कारण भूमि पर इसका दबाव बढ रहा है और साथ ही अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के कारण मृदा की उर्वरा शक्ति में भी ह्रास हो रहा है। कृषि संसाधनो एवं कृषिगत उत्पादों में वृद्धि का जो स्वरूप दिखाई देना चाहिए वह दिखाई नहीं दे रहा है, जिसका मुल कारण बढाती हुई जनसंख्या एवं संसाधनो के मध्य अर्न्तसम्बंध है। जब तक जनसंख्या एवं सासाधनां के मध्य धनात्मक सम्बंध नही होगा तब तक कृषि कार्य सम्बंधी कौशल का विकास नही होगा तब तक विश्व में खाद्यान्न संकट का समाधान नही ढूढा जा सकता है।

इस प्रकार प्रकृति प्रदत्त के संसाधनो जो कृषि कार्य हेतु मानव को उपलब्ध कराये गये है, जैसे– भूमि, जल, मृदा, की उर्वरा शक्ति, खनिज, ऊर्जा, प्राकृतिक वनस्पति, पशु तथा ऑक्सीजन आदि संसाधनों का परिमार्जित करके उपयोग करना होगा। वर्तमान समय प्रौद्योगिकी क्रान्ति का युग है लेकिन बढती जनसंख्या के कारण मानव द्वारा किये जा रहे सारे काम नाकाम सिद्ध हो रहे है। भूमि उपयोग संसाधनो का विकास भी उसी का एक महत्वपूर्ण कारक है जिसका विकास मानव तीव्र गति से कर रहा है। मानव द्वारा किये जा रहे ये सारे प्रयास नाकामी सिद्ध हो रहे है एवं उसका लाभ जनमानव को नही मिल पा रहा है।

साहित्य समीक्षा – भूमि उपयोग का उद्भाव मानव एवं पर्यावरण के साथ समायोजन के फलस्वरूप होता है। भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग **सावर (1919)** तथा **जोन्स एवं फिन्च (1925)** द्वारा किया था, परन्तु भूगोल में इसके अध्ययन को वास्तविक एवं व्यवहारिक महत्व **डडले स्ट्रैम्प (1931)** के ग्रेट ब्रिटिन में भूमि उपयोग सर्वेक्षण से प्राप्त हुआ है। भूमि उपयोग को **शफी (1960)** तथा **भाटिया (1965)** ने ठीक तरह से परिभाषित किया। इनके अतिरिक्त **राव (1947) अली (1947)** तथा **सिन्हा (1968)** आदि के भूमि उपयोग के विभिन्न पक्षों से सम्बंधित अध्ययन भी महत्व पूर्ण है। भूमि एक सर्वसुलभ प्राकृतिक संसाधन है, इसी पर मानव के समस्त आर्थिक, सामाजिक एवं सास्कृतिक कार्य सम्पन्न क्षमता के अनुसार एक संसाधन के रूप में स्थित रहती है।

चूँकि अध्ययन क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र है अतः ग्रामीण विकास का अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों एवं ग्रामीण जनो के सम्पूर्ण विकास के लिए आवश्यक सेवाओं को उपलब्ध कर संस्थागत एवं व्यवहरात्मक परिवर्तन के रूप में किया जाता है, **मिश्रा (1976), शर्मा (1977)** ने ग्रामीण क्षेत्रों के समन्वित विकास के सन्दर्भ में सन्दर्भ में भूमि उपयोग–सामाजिक–आर्थिक सेवाओं, वर्तमान स्थित एवं भविष्य में उपयोग की प्रक्षेरित स्थित में सम्बंध का विश्लेषण करते हुए एक नियोजन प्रक्रिया एवं रणनीति सुझायी है जिससें लोगों की सामाजिक–आर्थिक दशा में सुधार हो सके।

विधि तंत्र – प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ो को आधार बनाया गया है, साथ ही अध्ययन के निष्कर्षो को प्राप्त करने हेतु विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि–तंत्रो का प्रयोग करते हुए अध्ययन के निष्कर्षो को प्राप्त किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र कोरांव तहसील प्रयागराज जिले के आठ तहसीलों (करछना, कोरांव, फूलपुर, बारा, मेजा, सदर, सोरांव ,हांदिया) में से एक है। इसका अक्षांशीप विस्तार $24^{0}50'$

उत्तर और $25^{0}10'$ उत्तरी अक्षांश एवं देशान्तरी विस्तारी $81^{0}50'$ पूर्वी से $82^{0}20'$ पूर्वी देशान्तरो के मध्य स्थित है। कोरांव तहसील प्रयागराज जिला में यमुनापार क्षेत्र के द0 में स्थित है। यमुनापार भू–भाग क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना अन्य भूभाग से भिन्न है। इस क्षेत्र में गंगा की बालू तथा गाद विन्धयपर्वत का कछारी मलवा मिल जाता है। इसकी उत्तरी किनारा विंध्याचल की नलिकाकार, पथरीली, उबड़–खाबड़ एवं असमतल भूमि पर समाप्त होकर, उच्च–भूमि का एक कंकालिक चित्र प्रस्तुत करती है। कोरांव तस्सील मेजा तहसील से सटा हुआ है। यह क्षेत्र पहाड़ी– एवं पथरीली होने के साथ–साथ कटा–फटा यह कूटक (ऊबड़–खाबड़) जिनसे होकर भीतरी भागों के पानी नदी में बह जाता है।

अध्ययन क्षेत्र – कोराँव तहसील

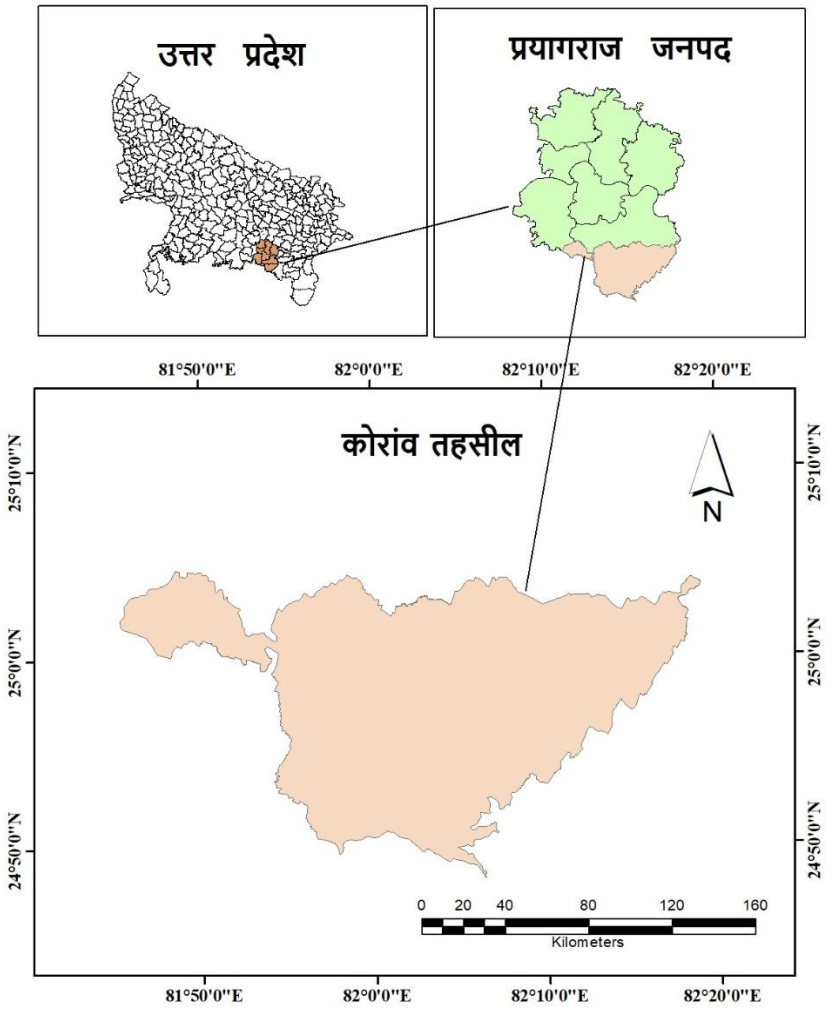

कोरांव तहसील केवल सड़कों द्वारा जुड़ा हुआ है। यहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग 135C निकलता है। राष्ट्रीय राजमार्ग NH76E से जुड़ा है। बौद्ध काल और मौर्य काल में एक प्रसिद्ध और विकसित नगर के अशोक स्तम्भ के अवशेष और बुद्ध की मूर्तिया इस बात की प्रामाणिकता सिद्ध करती है। कोरांव के एरिया डिजाइन और यहा के तालाबों के बनने और उनके डिजाइन भी इस बात की प्रमाण है

परिणाम और चर्चा – कोरांव तहसील में जनसंख्या वृद्धि दर 1981–91 सें 2001–2011 के बीच देख जाए तो 1981–91 में 36.20 प्रतिशत, 1991–2000 में 36.07 प्रतिशत तथा 2001–2011 में 27.30 प्रतिशत वृद्धि दर देखी गयी। इसी प्रकार जनसंख्या घनत्व की बात करे तो कोरांव तहसील तथा कोरांव विकास खण्ड में 2001 में 341 व्यक्ति /वर्ग किमी0 तथा 2011 में 434 प्रति वर्ग Km है।

कोरांव तहसील तथा विकास खण्ड में जनसंख्या घनत्व 2001–2011

विकास खण्ड	आंकित धनत्व (व्यक्ति /वर्ग km)		कृषि घनत्व (व्यक्ति/वर्ग किमी0)		कार्मिक घनत्व (व्यक्ति/वर्ग किमी0)		पोषण (व्यक्ति /वर्ग किमी0)	
	2001	2011	2001	2011	2001	2011	2001	2011
कोरांव	341	434	660	551	1825	436	230	513

स्त्रोतः जिला जनगणना हस्त पुस्तिका जनपद प्रयागराज –2001 –2011

सारणी :2 कोरांव तहसील तथा विकासखण्ड मे लिंगानुपात (प्रतिहजार पुरूषो पर स्त्रीयो की संख्या)

विकास खण्ड	लिंगानुपाति		अनुसूचित जाति का लिंगानुपात		अनुसूचित जनजाति का लिंगानुपात	
	2001	2011	2001	2011	2001	2011
कोरांव	894	905	897	912	880	867

स्त्रोतः– जिला जनगणना हस्तपुस्तिका जनपद प्रयागराज –2001–2011

कोरांव तहसील मे वन–0.93 प्रतिशत, कृषि बेकार भूमि +4.01 प्रतिशत, वर्तमान परती भूमि -11.35 प्रतिशत, अन्य परती भूमि -4.1 प्रतिशत, असर एवं कृषि में अयोग्य भुमि उपयोग का प्रतिशत -2.47 कृषि में अतिरिक्त अन्य उपयोग्य भूमि -3.77, चारागार -2.06 धान वृक्षो एवं झाड़ियों का क्षेत्र –2.67 तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्र -1.6 प्रतिशत है (**स्त्रोतः– साख्यिकीय पत्रिका, जनपद प्रयागराज 2005 एवं 2020**)।

कोरांव तहसील एवं विकास खण्ड मे जनसंख्या प्रतिशत (2001–2011)

कोरांव	कुल जनसंख्या	कुल प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	स्त्री प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	स्त्री प्रतिशत
	248803	5.04	52.81	47.19	316734	5.32	52.48	47.52

स्त्रोतः जिला जनगणना हस्त पुस्तिका 2001–2011

जनपद प्रयागराज के कोरांव तहसील में वर्तमान समय में कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप तथा जनसंख्या वृद्धि के मध्य अर्न्तसम्बंधों का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में जनसंख्या में हो रही वृद्धि तथा खाद्य फसलो के उत्पादन पर किस प्रकार दबाव बन रहा है उनका विश्लेषण तथा विवेचना करना ताकि कृषि संसाधनों पर बढते दबाव को कम किया जा सकें। भूमि उपयोग या कृषि तथा जनसंख्या के मध्य धनात्मक सहसम्बंध हेतु योजना प्रस्तुत की जा सके।

निष्कर्ष :– अध्ययन क्षेत्र के सर्वागीण विकास हेतु कृषि संसाधनो के विकास हेतु आधारभूत संरचना को विकसीत किया जाना आवश्यक है साथ ही जनसंख्या वृद्धि को नियत्रित करने हेतु सरकार को कठोर नियम बनाने की तथा लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। राज्य एवं केन्द्र सरकार को विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं को क्रियाशोध करना होगा सरकार को कृषि क्षेत्र को बढावा तथा कृषि सुधार हेतु, अनुदान उपलब्ध कराना होगा साथ ही साथ उन्नत कृषि यंत्रो, उन्नतशील बीजों , उर्वरको, कीटनाशक दवाओं आदि की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी तभी जाकर आदर्श जनसंख्या की अवधारणा के साथ ही आर्दश कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप विकास अध्ययन क्षेत्र मे मूर्तरूप प्राप्त कर सकेगा और उत्पादन क्षेत्र का विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

संदर्भ सूची

1- Saure , C.O.1919 , mapping and utilization at land, grograprical revieew -4
2- Chattergee, S.P. 1945, land utlization on in the pistrict 24- paragamas, geograpriccee review of india. kolkata 14 (3).PP.12-23
3- Stamp, L.D. 1931, the land uttization slirvey of britain geoggaprical Journal. 78 PP,40 –
4- Safi . m. 1960. land utlization of eastorn U.P. aligreh university, Aligarh.P.17

5. एस. आर. एवं तिवारी एस. (2013), जनपद इलाहाबाद (उ0प्र0) जनसंख्या वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन, राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, वाराणसी, वर्ष 4. अकं 1 जून पृ0 103–112
6- Agarawal A.N (1977) India population problem mc Grow hill. new delhi.
7- chandna. R.C. (1983)Janakikee,Goyal Publishing House, Subhasn nagar, meeret
8- Clark J.L (1965) "Population Geograpny" progomon press ot ford.
9. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद प्रयागराज, 1981, 1991, 2001, 2005, 2011, 2020
10. जिला जनगणना हस्पुस्तिका, जनपद प्रयागराज, 2011
11. गौतम, अलका, कृषि भूगोल शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2009
12. शर्मा, बी. एल. कृषि भूगोल, साहित्य भवन, आगरा, 1988.
13. सिंह ब्रज भूषण, कृषि भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर, 1996
14. मौर्या. एस. डी (2007),''जनसंख्या भूगोल 'शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद पृ0 165,325
15. सिंह, शिवशंकर (2000), भारत में समन्वित ग्रामीण विकास एवं नियोजन,राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पृ0 26–33।